ऊणा कर्मनी स्थिति तीस सागरोपम एवं श्रावकर्मनी उत्कृष्ट स्थिति ऊणी विंशति द्वितीया ग्रा घाटि दिवड्ढ समकित
प्राप्ति नो उपाय कहिइ छइं। पल्यो वल्ले मा ईश्रहा पवर्ति करण एणे को निज ऊणा इ। पलि आसंख्य सा गुणा कोडी को
डियर द्वि ईसमं। ३ अ द्वीप द्वय २ गिरि सिउ वला २ पी वी लिआ ३ मु रिस ध्यव पडरग्ह लिआ ६ ऊद्व अ ऊल ऊव द्वाणि उ
सामाइअलाभ दिढंता ११ इति श्री आवश्यक निर्युक्ति। श्री सउबाऊ स्वामि ववनात् श्री सम्यक्त नी प्राप्ति विषइं। नव
दृष्टांत बइ तिहां पल्य १ उपम इ दृष्टांत य ग्रंथि भेद प्रवृत्ति करण विषइं लावण करण तीन प्रकार ३ यथा प्रवृत्ति करण १ अपूर्व
करण २ अनिवृत्ति करण ३ इति हां जिम कोई क पुरुष पल्य मांहिं थी को धान्य घालइ घणो काढइ इम वार २ क रितां कालंतर थी
ए हो इं। पल्य थी लोधा इ उं घात ग्रा उपल पाषाण पर्वत नदी पाणी प्रवाहं क रि घा मि श्री ए हो इ इम क र्म रूपी यथा धान्य पल्य वि षइ
जीव अनाभोग ग्रंथि को छो कर्म ग्रंथि करत उ। बऊ क र्म षपावइ ता उ पाषाण दृष्टांत नी परि छव नाघोल ना करतो अकाम निर्जरा
१ इं कर्म खिपावत उ अकाम निर्जरा की सात कर्म की कित उ बी २ कोडा कोडि सागरोपम स्थिति प्रमाण करतो २२३ कोडा कोडि सा
गरोपम स्थिति षपावतो गांठि सिम आवइं ते यथा प्रवृत्ति करण कहियइं। २ जे अध्यवसाय जीव इ पहिलीत हिउ पाय उ ते अध्य
वसायें करि। घन राग द्वेष परिणाम रूप गांठि सेदन नइं। उद्यम मां इ इं ते अपूर्व करण कहिइं २ जे अध्यवसाय आव उ ते करें नि वृ
त्ति इं। ते हिते अध्यवसाय करी पंथिं सेदीन इस म किंपा मइ ते। अनिवृत्ति करण कहियइं ३ गांठि कि सुं कहियइं गंठि तिसु
ऊ जे दो कर व उ घण रूढ गुढ गंठि चि। जीव स्य कर्म जाणिउं। घण राग दोस परिणामो। २ कठोर अति ऊलेद्यउ रूक करिसे दिजइं
अति कष्ट करी सेदीजइ। स घन चीकणी कीकी जि मगांठि उ रव करी बूटइं फुटइं त्रूटइं ति म जीव नइं कर्म जिते। निवि ऊ अनि
रोध राग रूष मय जे परिणाम ते गांठि कहिइं। गांठि सीमा तलगइं यथा प्रवृत्ति करण २ गांठि सेदतां इं जीव नइं अपूर्व करण २ जे परिणा
म ग्रा घां पढइं जीव म म कित्व ये र्मुकृत मा हिं पा मइं ति अनिवृत्ति करण ३। अ घ गा घा जा गं बीत पढमे गांठि समइ व तो बे बीजं अ
नि अट्टी करण पुण्य समय पुरके जीव। १६ इति श्री आवश्यक ववनात्। स्वेगा घो अक्षरार्थ लिखिइं छं। पछे ए के हेतो पल्य उ

पल्य नी उपमा करी दृष्टांत करी य ग्रंथि प्रवृत्ति करण करतां जे को ई क जीव क मंतणी पल्योपम नइं अ संख्यात प्रइं सागइं करी उ
णी एक कोडा कोडि सागरोपम प्रमाण स्थिति घा क ति करइं सात कर्म नी प्रत्येकिं २ एक कोडा कोडि सागरोपम स्थिति रा षइ अउ
रष पावइ ग्रा पतावइ ग्रा एतलउ कीधइं सम्यक्त नी प्राप्ति जीव नइं अवश्य हो इं। निहंउ त्तर सम्यक्त नी प्राप्ति ना स्ति ए वात के देव
ज्ञात च विगंठि घणा राग दोस परिणाम रूप अंसि देतो। गांठि ऊजी वो वि हा। न लहइ इउ इं मण नाम ध्यं प्रवृत्ति करें तां ति हां ते त्व
कर्म नी स्थिति घा क ति रहे तां घ को पणि घण राग दोष परिणाम थ ए हवि गांठि ते हन इं ते हन इं अण सि देतो गांठि सेद अण करतो इस्यक
हतो षे द वचन जाणिय इं। अत्र च उरत्र य व दूषण करी। अघ वा त्र्य तो पण्यि क न इं। अत्र वइं करि त्रा घ हे स्वामिं। गांठि क जीव। उ इं दे स
ण कहतां ता इ उ ति षित सम्यक्त न लहइं। अत्र च्य पण ग्रंथ ग्रा प्रवृत्ति करण करतो गांठि सम्मी पइं ग्रा वइं। तीर्थंकर दे व नी स मे सरण रि
द्धि। गणधर नी ऋजु सकार न इं देषी वा द्धि कि श्रुत सामायिक लाभ पावइं सम्यक्त्व नइं न दर्शन रहित द्रव्य चारित्र महा कठोर क्रिया कलाप उग्र परीसह महा सहन। अतियंत्र तपो लइं पर त्रा स म्यक्त न पावइं। एत्र ति प्रायश्चित्त आवश्यक वृत्ति मां हिं वषाण उ इं। सर्व जीव गांठि
सि म्यत्र नंतिवार प्राप्त ऊ ग्रा। अन इं गांठि क जीव त्त व्य अथवा ग्रसव गांठि विषइं संख्यात असंख्यातो काल रहइं। एटले श्री तीर्थंकर गणधर
देव कहइ ए चोधिगा द्धा अही हिं वे जे जीव गांठि ते देंते कहें छें। पहि ग्रपतीलि ग्रा णा। कोवि पजत्त मन्नि पंचिंदी। सन्नी ग्रवद्ध गलापरि
ग्रद्ध वसे स मं मारो। ५। ग्रधी ग्रपूर्व करण नउ विषइं पक्षिक १। पिपीलिका की कीए २ दृष्टांत जोड ण। ति इम जइ रहइ ति न्नि मणुसा जंतऊ
वि यइं सहाव गमणेणं। वेलाइ क मनी ग्रा उरंत पन्नाय देसो रा। एदवं म गतऊ छे ते एगो म्ग ग्रछुपडि नि ग्रत्तो। बीउ गहिउ तउ। सम्मं कं।
तो पुरंतो। ३। ग्रवरो सव्वो मणुसा जो वा कम्म ठिइ एहवी हो गांठि ग्रासन्न गो णं। एगदेसो य देसो रा उ। स गांठि इ पहि च्छि। गहिउ पुण
गांठि उ गउं तइउ। सम्मत्त पुरंण व जो इजा। तिन्नि करण मइ धा। तिनि पुरुष स्व सावग मन क रि ग्र इ वि मार्ग श्वा ग्या जा ताऊं ता इ इ इ दी
वेला नइं विषइं। मार्ग तटनें विषइ रह्या। सोर देषी एक पाछो फिरयो। ऊजड ऊकात्म उ। तीजउ इष्ट नगरि पुऊंतो। इ इं उ एनय। ग्रटवी
रूप संसार पुरुष सम्यक्त्व ग्रजीव क र्म स्थिति मूलीय उदीर्घ मार्ग यं थि क्रिया ग्रायस्थान करण दोष रूप पियासे इ चोर। ति हां जे पुरुष सागउ पाछो फि।

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

एगविहं

रूकाणस्सअट्ठे।इत्यादिईमंकहंतोअनिश्चयमयकरी।आत्माहीतुसमकितजाणिवउ।आत्मेचदर्शनज्ञानचारित्राणिइतिश्रीयोग।
शास्त्रवचनात्।इत्यरंकहेंतोईस्त्रनेरखव्यवहारसमकितनुस्वरूपमयेकहेंतांतादृशसिद्धांतनेंविषईसम्मतहेऊहिंकहेंतोसमकित
नाजेहेउमिथ्यात्वीपरिचयत्यागादिकादेवगुरुसंघसक्तिश्रीजिनशासननीउन्नतिंप्रमुषतांएकरीसणियंकहेंतांकहोदेवगुरुस्त।
क्तिप्रमुषहेतेंकरीव्यवहारसमकितलिषीईछईएसावदेवगुरोरंसंघेव।सङ्गक्तिश्रीशासनोन्नत्तें।अहोतोपिकरोत्येवा।स्थितिरस्तस्थेयु
णालये।श्रुतिस्त्वविधायिविरचितगुणस्थानविचारप्रकरणवचनात्।।हिवईनिसर्गसमकितकिमपामिईतेकहेछेजलवत्रप्रगटू
ह्व।जगईनाएणजेणपन्नत्तं।निसग्गुवएसुत्तंसम्मत्तंतमाउत्तनमो।२२अथः।इहंजलदरवस्त्रकोद्रवहारदृष्टांतत्रणपुंजनेंविषईसाविय
दिठोमार्गरूपएरदृष्टांतइहांसावणेतेईमाणकोईमार्गथकीस्त्रोउपदेसविनासमतोआपणोपंथोजुमुधोमार्गपामेंकोईकपारेकोई
उपदेसकरिसुधोमार्गपामेंकोईएकसुधोमार्गनपामेंएदृष्टांतमार्गेंहिरकोईएकविनाऊषधईआपणेईहिजजाईकोईएकहूरनोंजाणएहरदृष्टांतईमकिसहिनसमकितमार्गनीप्राप्तिअनेंमिथ्यात्वरूपियोहूरातेहनोनामस्त्रसावेंकरि
हेईकिसवीनईउपदेसईकारिहेंईतउअहोनुधजिनितईजलावस्त्रमार्गइकेद्रवधहरकरपदृष्टांतेकरीनिमार्गउपदेससमकितापण
तेकहेंतांधरूपियोतेउऊनेंनमस्कारहो।२२६मेंविधसमकितकह्यो।हिवेंत्रिणिविधकहेछेंतिविहंकारगरोगरोअगादीवगतेए।
हिंउदयविऊहिंस्वउवसमिअउवसमिस्वइअसतेएहिंवाकहिअं।२३।अथी।अहोश्रीवीतराग।उदयविऊहिकहेंतांता
हरईमतनेंवित्तेजाणएहोरंगएधरावेहिंकिंकारकरोवेकरदिपकरइसेदेंकरी।अथवारवायोपमसमकितउपसमिकरइकां
यिकइसेदेंकरिंत्रिविधसमकितकरउ।२३हिवेंकारकप्रमुषनामलक्षणकहेछेंजंजइस्सणियंउमएकहेंतांजेजिनेंहउतईहेस्सामितितिमकरिवेंकरिकारकसम्य
तकहियइं।जेस्वउआकित्तगदेवेंनमोछेतेस्त्रेजेआचारतेकारकसमकितवंतेंहोईरोचकसमकितवंतवलिकहिंतादृशसमकितधर्मनेंविषेंऊविमात्रकरिसुधोसद्दहें।२४सयमिहमिच्छदिठिधम्मकहइहिंदीवइपरसादीवगसमत्तमिणं।सणंतिउदसमयमए

मइणोत्थाअथीसयंकहेंतांअपणपइंमिथ्यादृष्टीअथवाअंगारमर्दकआचार्यसरीषोअनाचारधर्मकहाईहिंकहेंतांधर्मकहाकरि।
आदिमशब्दनेंमपयसमहितक्रियाकलापनेंआंकबरकरीपरसकहेंतांअनेरालोकनेंजीवादिकनेंजीवादिकनवतत्त्वदीपवेंप्रकासइं
एतादृशसिद्धांतनाज्ञातागीतार्थदीपकसमकितलषांतिकहेंतांकहइं।कारणविषईकार्यनाउपचारथकिमिथ्यात्वीनईदिपकसम
मकितसाविय्इं।एसाव।२५।हिवईक्षयोपसमकिंप्रमुषसमकितनउस्वरूपकहीईंछईं।अथवकयतिपुंजो।मिछमुहणंत्थवि
उहेअणुहणंउवसामिउविअट्ठीकरणउयरंखउक्समी।१६।पलिनउतउअपूर्वकरणनेंध्यवसायकरी।अंतमुंकुंतमात्रकोलें
कयंधिनउसेदकरीक्षाकतिजेमिथ्यात्वमोहनियनिस्थितितेहनेंउअंतमुंकुंतीउदयकरणथकिं।अंतिकमाविउपरीतिअनिहतिकं
रणनेंअध्यवसायकरि।अंतमुंकुंतमात्रकालप्रमाणअंतरकरणकरइतिणईअंतरकरणकिधईस्थितिहोइतेहिजअंतकरण
थकिदेहिलीस्थितिअंतमुंकुंतंप्रमाणतिहिजअंतकरणथकिउपरलोउजिस्थितितिहांपछमस्थितिनेंविषेंअजीमिथ्यात्वजउइ
अंतमुंहुर्तकरीस्थितिरखमाविधकीअंतकरणनेंहिलईसमेंजीवउयसमसमकीतपामइंऊषधसारिषउतेउपसम
समकितजाणिवो।तिणेंकरीकोद्रवरजतरवस्त्रसारिषउमिथ्यात्वमोहनीयकर्मसोधीकरीतीनप्रकारकरइं।
ते किमपासुधपुंजरअर्धसुद्धपुंजरअसुद्धपुंजइतिहांजिवारइंसुधपुंजाउदयआवइंतिवारइंक्षायोपसमिकसमकितनर्प
प्तिहोई।हिवईंगाधानोअर्थप्रतिपादियइछईजिमकोद्रवधोयाधकरएकअयणालिगारएकमयणामयणाहोइंजलआद्रं
उद्वाडोमुडलउंकुडलविविधहोइंइवसधोयउनिर्मलिरषोकोद्रवमलिनरमलिनविविधहोइं३इमतीनपुंजजोणवाआपद्वकयतिपुं
जोकहेतांअपूर्वप्रवर्द्धनहिकिध्यातेकिधातिनपुंजजिणिएहवोंसव्वजीव।मिछसुरणंरखविउकहेंतांउदयआयउजेमिथ्यात्व
तेषप्राविकरिअनुइणंउवसामिअकहेंतांउदयनहिआवोजेमीथ्यात्वतेउपसमाविकरीअनिअट्टीकरणोउयरंकहतोअनि
हतिकरणथकीपरउउपरंतिसुद्धपुंजनेंउदयथकेंखउवसमीकहेंतांक्षायोपसमसमकितहोइं।क्षायोपशमसमकितधामइं
एअधीरहाहिवेंउपसमसम्यकितनउस्वरूपकहेंइंछईं।अकयतिपुंजोऊमरादवइंतिअदहरूरक्तापणाअंतरकरणउवसमि

उ। उवसमिउ वासमेणिगउ। एणअर्थ। उपस्थेतरनइं विषइं दवनीकालइं जल्यउहक्कए२ दृष्टांत जिनवचननें विषइं अग्नि मिलागीऊवइं
तिकालखेत्र अनइवाप्रर्वे बल्योऊषइं धणपामीकरिबुझें तिमभिथ्यात्ववेदऊपिणीअग्नि अंतरकरणपामिकरिबुझऊइं ईमदृष्टांतक
रिअकयतिएंजोकहें तांजणिइंवइंवषाणपा। तिनएंजनदीकीधातेएदवेसवजीवअंतरकरणउवसमिउकहें तांएवीइंकहीतेअंतर
करणतेदनइंविषइंउपसमसमकितवंतदेइं। उपसमसमकितयामइं। एउपसमसमकितएकवारऊवइं। एमोदनीवीजझाणिदी
उपसमश्रेणिनेंविषइंपणिउपसमसमकितऊवेंतेकहेंइं बइं। उपसमिउकसमेणिगउ। अथवापक्कांतरि। खवश्रेणिगतउपसमश्रे
णिनेंविषइंउपसमीकधाइं। तेकिम। चउथउगुणठाणउआदिदेईसातमागुणठाणालगें। अनंतानुबंधियाचउकथसमकितमिथ्य
२मिश्रवइमोदनियएवंसप्तप्रकृतिउपसमावीकरी। अष्टमागुणठाणानेंविषइंशुक्लध्याननोप्रथमपायोध्यावेतोउपसमश्रेण
मांहें संक्वलनोलोभसहितमोदनीयकर्मनीरण पकिति अपूर्वकरणइंअनेंअनिवृत्तिबादरनामएणगुणठाणइंउवसमावइंद
शमइंगुणठाणेंसंक्वलनोलोभकिट्टीकृतअणुकरइंइणारमइंउपशांतिमोदगुणठाणइंमोदनीयकर्मउपसमावें। तथाऊषसनारच
संघइणनोश्रेणीउपसमश्रेणियउश्रेणिअणहस्सइंउत्कालकरइंतउअणुत्तरदेवपणेंऊपजइं। पुष्टआऊषेजोहोतउउपशांति
मोदगुणठाणालगें। मोदनीकर्मउपसमावेंतिहांउपसमसमकितघाइं। उपसमश्रेणिनेंश्रेणिअवश्यमेवपडें। जउवरमसस्सि।
होइतउसप्तमेंगुणठाणेंआविरहें। पुबेंउंचइंचढइं। अवरमसरीरबऊलसंसारिकोऽकिसादनमिथ्यात्वगुणठाणइंपिणिश्रा।
वें अनंतसंसारत्वमणकरइं। मुश्केवलिआहारग। उजुमइउवसंतगाविऊपमाया। हिंतित्वमणंतांतयणात्समेक्वउग्रहा१
इत्यादि। एविचारगुणस्थानकविचारप्रकरणअनइंकमयंथइंकिविसेषइंजाणजो। तथाएकसवनेंविषइंएकउपसमश्रेणिका
रिऊपकश्रेणिपणिपडिवजइंपरजेएकसविंदोइवारउपसमश्रेणिकरइंतेतिणिसविऊपकश्रेणिनेंचढइं एकजीवसर्वसंसारमोदि
श्रउपसमश्रेणिपामइं। एकसवंतरनेंविषइंदोइवारउपसमश्रेणिपडिवजइंक्षपकश्रेणि१करइंतिणिसवंकेवलज्ञानलहीमु
क्तिवधकवरइं। जीवोऊवइंछजम्मंमिइकमिउंवसामगोस्वयंपिऊझानोकुझा। दोवारगुवसामण१उवसमश्रेणिचउकंजा

यइंजवसम्यासवनूणोतापुणावोएगसवेखवगसेणीपुणोएगाइतिवचनातऊयोयमश्रनेंउपसमसमकितनें किसोविसेष।
इहांउत्तरऊयोयमसमसमकितनइंविषइं। मिथ्यात्वपुद्गलनउसेदिवेउविषावकनहीकोनहिंछेदसक्यकिवइं। उपसमनइंवि
षइंछेदसक्यकियाणीमिथ्यात्वपुद्गलनोवेदिवोनाथी। एविसेषऊंणीवोएमसंगागतसिरिविउवइं१शदिवेंएकनोस्वरूपकहेंवइं।
मिथ्यात्वसम्यउ। मोसत्रगिरिवीणवस्वद्याउष्यगतिसवसवविमुखोतत्त्ववसिद्धियइंअरोअए। अर्थः। अनंतानुबंधियाचउकथ
मिथ्यात्वमिश्रसप्तकितंतिनपुंजनइंक्षयकीधइंक्षयोपशमकियावइंतेक्षायिकवइं। आऊषउधकउजउश्रेणिपडि
वजइं। सतगीखणताशकहेतांसातघऊंतिकीणऊंतोतिश्रइंरहेंसेषश्रेणिनइंसरीमकरें। तेमउंतिसवसाविसुखोकहेंतांघ
रितिनसवमोदिसाविवइंमोक्षपदजेहनेंएहवोदेवतानारकीनउजिनिक्षायिकसमकितीआउषोबांधइंवइंतेनिऊंसा
विंमोक्षपदपऊंवइं। असंख्या८तआउषानाश्रीजुगलियेतेहनोआउषेजिणेंबांधिउछिइं। तेवऊंघइंसविसिद्धऊंवइंक्षायि
कसमकितप्राप्तिसवप्रथम ऊगलियानोसवरतेहथकीथेमानिकदेवतानोसवउतेरधिमनुषसवपामीयथाख्याताचारित्र
धिरिकेवलज्ञानपामिसिद्धिपुरनगरनोरएजाहोइं। इमसवधऊंणिवाश्रेणिनोस्वरूपआवश्यकनियुक्तिथकिजाणीवो। तत्त्वमि
श्रियइंअरोविकहेंतांइत्तरनरउजिनिआऊषोनहिबांधउतेक्षायिकसमकितिंतेंत्रविमिद्धिपावें। इहांदिवेंचउविधसमकितक
हेंवइं। चउहऊंसासाणंएकइंवपणंचमतपदणंचउवसामिउपकंतो। सासाणोमिछमप्पत्तो। एए। अर्थ। चउहांकहेंतांचारि
पुंकारिसमकितपामइंजउसासादनमिलइंतेइमा। अर्तमुर्ऊंतपमाणउपसमसमकितनोकालतेहनोंउतरुष्टतउषश्रा।
लीधाकतइंजघन्यश्रउएकसमयधाकतेंधकइंउपसमाव्याऊंताजेष्यनेतानुबंधियाकषायतिमांहेएककोइएककनइंउदइंउपा।
समसमकितवमतोगुरुनावननीयएजिमकिणहिपालिगुरुनोव्याहारकिधोहोइंतेहनेंवमनकालगुरुनोआसदआवइं
इत्यिष्टश्रीतिजिमकोइकऊंचामालीयाश्रकिपकेंतेहनिपरिसमकितनइंआसदजोतेंधकसामदनसमकितहोइंउपसमसम।
कितनोधणिपडतोधिकोजेतलेत्रजिमिथ्यातिनहिपऊंतेंतितरइंस्वासादसमकितकहियइं। एएहवइंपंचविधस

म कितक हिइं बइं। तेअगल्ल अंपंच सिहं तंतउपुंजस्क यंमितइच्छस्स। स्वयकालिकस्स मरण। मुक्खएसेअगो होइ। २०अर्घ विद
कयुतसहितपंचप्रकारसम्कितघाइंतेवदाकहो किमहोइंतेकहिवें। उपुंजस्वयंमितइच्छस्सस्वयकालिकहेंतांमिथ्या चमि
अपुंजनइंक्षयकिधइंधकेतिजापुंजइक्षयकालनेंवेहलइंसमइं। सुक्खएसेअगाकहें तांसुद्धक्षायोपशमिक। पुदगलना।
वेदवाधकि। वेदकसमकित होइंजि मस्सद्धलोसषंक नावेदवाधकिसुद्धसंपरायक हियइं। तिमसुद्धएकक्षायोपसमिक।
तएदगलनावेदिवाधकिवेदकसमकितहोइं। क्षयोपसमइंनइंवेदकनेंकहणविसेष। उक्तं विषयसुद्धपुंजनोवेदव
उबइं एपक्ष शिर्षेकिधो। तिहंउत्तर। वेदकसमकितसमस्तउदयआवाउक्षत्र अनुदवइं। क्षायोपसमनेउदयआ
व्यानहि आव्यासमकितपुंजलवेदइएसावश्रीप्रवचनसारोधारनीटीकानें अनुसारइंइहांलिखाउजोलिवो। हिवेंसम
कितनोकालमानकहियें। अंतेमुजतोवसमो। छावलिसासाणवेयगोसमउ। सादिअतितिसायरखउ। उगुणोस्वउवसमे
। २१सुगम। उकोसेसायणउवससियाकंतिपंचवारउवेयगखइगाइकसि। अंसंखवारखउवसमो। २२अर्घा। सुगमः।
हिवइंकिणंगुणठाणकउणसमकितहुइंएवातकहें वइं। बीयगुणेसासणो। उवसियाइसुअविगारवउ२सुउवसमखा।
इगवेयगखाउवसमीकमाजंति। २३बीजेंगुणठाणइंसासादनिसासादनसमकितहोइं। उवसियाइसुअविगखउ।
चउसुएपदसेतिउवसमखाइगवेयगखाउवसमाएपदक्रमक्रमइजोडियइं। उवसियाइकहेंतांवउघइगुणठाणइं।
ददेइअड। उपसांतमोह ११मगुणठाणाथकेंउपसमसमकित घइं। तघावउघेगुणठाणउआदिदेइइग्यारअजोगि।
केवली १४मागुणठाणालगी। क्षायिकस मतागेसासईहुंतघावउघइगुणठाणउआदिदेइचारिअप्रमत्तनामेष। मगुणठा
णासिमवेदकक्षायोपशमिकएखेसमकितजवइं। परमार्घइवेदकक्षायोपशमिकएकहीजुजाणीवावेयगखइगउवस
मसेवउरोएगो। अकउरियइंहतिथीजिनवइससुरिरुतषम्बीलिखनात्हिवेंवखहरसमकितनासेदकहेंबइंतस्सम्मि
लिंगलषणं। उसणसुसणपसत्थागारासदहणजयणत्तावणठाणविनयगुरुणइयं। २४अर्घा। मिनिसुदि। मनसुद्धिवीतरागनामवच।

नसत्य। अउरसास्त्रमवकुंडा स्त्रीवितरागनाचरणाकमलनीआराधनाघजइमदारुकाजनसीझइंतउकोदेवघकिमारह
राकाजक्रिमसिझस्यइं। एवचनसुद्धिरुपाणांतइंपिणावीतरागदासियनुरक्तणादेवनवांदइं एकायसुद्धि। ३। षड्सांगी।
नीसुणिरवीणावीढाकरइं। केवलिसाधितधर्मनीआस्ताए। देवगुरुनीसक्तिकरइ३। एतिनलिंग। उखीयाउपरदया।
करइं। रागद्वेषउपसमावइं। वयरागसावलावेइमोक्षनीवांछाधजीवादितत्वसत्यश्रास्तिक्य५ एपांचलक्षणासंका। ख्याकां
क्षा२फलउपरसंदेहतिगंछा३ऊमतिऊलिंगीनीस्तुतिधमिथ्यातीनीसंगति५ एपांचउषण५क्रिया आचरसावध्य नकरइं
। १। तीर्थसेवाकरइंदुव्यसनावर्तकरइं। २। मंघसक्तिकरइं३धर्मस्निष्टनइंधतिबोधदेइथिरथापइंधसावनामहामोहबव
करइं एपांचसुषणपंचवयणीधर्मश्रद्धादिदृष्टाविकतत्वविद्यावंतसीधोयकहेतांवचनसिद्धि। रायाभियोगेणंगणा।
भियोगेणंबलाभियोगेणंदेवाभियोगेणं। गुरुनिग्रहेणं। वित्तिकंतारेणं६। एछआगारतवरुनीधरइंगिताथजतिपष
मुषनिसेवाकरइं२व्यापन्नदर्शनिनिरुंवतेहनीस्तुतिकरइं। कुदर्शनिमिथ्यात्वीनीस्तुतिनकरइं एधसद्दहणाजांणवी
ऊदेवकुगुरुनइंवांदइंनिहि। १नमस्कारकरइनहि। २धर्मबुद्धिइंदाननथापइं। ३आलापसंलाप४आगतस्वागत
नकुइं। ५ इजयणा। धर्मदृष्टनइंसमकितमूलधर्मनगरसमकितद्वार। धर्मप्रासाद समकितनिवइयतीधर्मश्रावक
धर्मरत्नसमकितनिक्षानधदेशत सर्वतवास्त्रिनइंसमकित आधारपक्कतसीलतेजनमुक्तिस्वादसमकितलाजइंनइएदंसन
नाजीवअजीवतत्वसिद्धएनामसत्य जीवद्रव्यमासवतउरजीवआठकर्मकर्तीहइ जीवपुन्यपापनोक्षाधास्तव्यजीवनइंसक
लकर्मनइंमोक्षपजीवनइंशुक्लध्याननोउपायमोक्षएदा एछदृष्टामअरदंतसिद्धरचेइअनुसुएअधर्मनोअपसाऊवृ
गोअइआयरियउझाएपवयणेणंदसणेदनोविनयकरइंतिहांपवचनकहेंतांवउविधिमंघादं
सणकहेंतांसमकित। एवंसवीमिलिाइंतेदअवदारनाघइं। विहारंतदसमयासमयसरंताणंसद्धजीवाणंसा

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

प्रियउदयप्रसादवेउसम्यक्त्वसंपन्नोऽभवत्सर्वविरतिं चलरिवाणावैत्रसिंदकृतवान्त्रिकाताःसेवनेन
पवर्षमार्गशिरघमासेशुद्धदिपदिनेगुरुवासरेशिरोरयोमलिखितंपंमोहनविजयगणिकृतश्रीपगलात्सवोचनार्थं॥

DR. BHAU DAJI LAD MUSEUM
डॉ. भाऊ दाजी लाड संग्रहालय
MEMORIAL